जनवरी - फरवरी 2012 वर्ष - 2 , अंक - 10

जीवन का मार्ग

विषय वस्तु

संपादकीय	1
नम्रता की आत्मा	2
धनी व्यक्ति और अनन्त जीवन	6
मार्ग सच्चाई और जीवन	10
शब्द पहेली	12
बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता	14
टोकरी में बालक	16
रंग भरो	17

अदन का बगीचा

अदन के बगीचे से निकाले जाने के बाद जब आदम होश में आया तो उसने सोचा कि काश, यह एक बुरा सपना हो। पर तभी उसे स्मरण आया कि पाप में गिरने से पहले श्राप तो था ही नहीं!!

Cover Photo : Sarah, Damoh.

मसीही विश्वासियों की आत्मिक उन्नति एवं वचन में बढ़ती के उद्देश्य से प्रकाशित एवं प्रसारित अर्न्तसामुदायिक द्विमासिक पत्रिका

पत्र व्यवहार के लिये पता

जीवन का मार्ग

पोस्ट बॉक्स् न. - 27,

बिलासपुर - 495 001, छ.ग.

संपादकीय

नया साल! नई उम्मीदें!! क्या ये उम्मीदें पूरी होंगी? खबरों से पता चलता है कि पश्चिम के कई देश आर्थिक विषमता के दौर से गुजर रहीं हैं। मैं सोच रहा था कि क्या ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि उन्होने खुशहाली के समय अपने सृजनहार को स्मरण नहीं रखा। जीवन में उतार चढ़ाव का आना तो लगा रहता है परन्तु अपने परमेश्वर के अस्तित्व को नकार कर संसार में रम जाना कैसी बुद्धिमानी है?

2012 के रूप में परमेश्वर में हमें एक और वर्ष दिया है। आईये, प्रण करें कि परमेश्वर के साथ इस वर्ष का आरंभ करेंगे और उसी के साथ हम इस वर्ष का अंत भी करेंगे.....अर्थात् पूरा वर्ष हम परमेश्वर के साथ व्यतीत करें। परमेश्वर को महिमा देने वाला जीवन व्यतीत करें। प्रभु आपको आशीष दे और आशीष का कारण बनाये।

प्रभु की सेवा में

संपादक

नम्रता की आत्मा

साजु जे. मैथ्यू
तिरुवल्ला, केरल

प्रेरित याकूब कहता है कि वचन को स्वीकार करने के लिये जान बूझकर किया गया परिश्रम आवश्यक है - और यह नम्रता के साथ होना भी चाहिये (याकूब 1:21)।

'नम्रता' शब्द के लिये लेखक द्वारा दिया गया अर्थ एक निर्विकार दशा नहीं है बल्कि यह भावनाओं का सही मिश्रण है। मनुष्य के पास भावनायुक्त व्यक्तित्व है - और यह ईश्वरीय भी है।

यदि वचन किसी व्यक्ति में किसी प्रकार की भावना उत्पन्न नहीं करता है तो इसका तात्पर्य है कि वह कार्य नहीं कर रहा है। वचन को हममें भावनायें - प्यार, दुःख, भय, पश्चाताप - उत्पन्न करना है। वचन को स्वीकार करने पर ये सब उत्पन्न होने चाहिए। और हाँ, वे सब वहीं उत्पन्न होने चाहिए जहाँ उसे उत्पन्न होना है। इसलिये नम्रता की आवश्यकता होती है।

दाऊद और नातान नबी की कहानी को ही लीजिए (2 शमूएल 12 अध्याय)। नातान नबी से कहानी सुनकर क्रोधित हो दाऊद चिल्ला उठता है कि "वह मनुष्य मृत्यु के योग्य" है। किन्तु वहाँ पर क्रोध नहीं -पश्चाताप् उत्पन्न होना था। देखिए, गलत स्थान पर गलत भावना प्रवेश कर रही है। यहाँ पर मनुष्य की भावना (दाऊद का कोप) प्रगट होती है परन्तु वह भावना नहीं जिसकी माँग वचन करता है।

'नम्रता' हमारे भावनाओं के लोक की एक तैयारी है। ईश्वरीय भावनाओं के लिये भूमि तैयार करने हेतु हमारी मानवीय भावनारूपी जंगली पौधों को उखाड़ फेंकने की अवस्था। दाऊद ने भविष्यद्वक्ता के वचन को नम्रता के साथ ग्रहण नहीं किया। वह उस खेत में वचन के बीच बोता है जहाँ पर मनुष्य की भावनाएँ कटनी के लिये तैयार खड़ी है। और परिणाम....? दाऊद का क्रोध फट पड़ता है। वहाँ पर पश्चाताप् रूपी ईश्वरीय भावना होनी चाहिए थी परन्तु कोप की फसल पकती है। नम्रता स्वीकार करने पर पश्चाताप की फसल पकी। जहाँ पश्चाताप करना चाहिए वहाँ पश्चाताप और जहाँ दुःखित होना चाहिए वहाँ दुःख और स्वयं को अधीन कर देने वाली नम्रता के साथ हमें वचन को स्वीकार करना चाहिए।

जिस प्रकार 'नम्रता' परमेश्वर की भावनाओं के लिये उपजाऊ होने हेतु हमारे भावनाओं

के संसार को तैयार करने वाली होती है ठीक उसी प्रकार वह एक विद्यार्थी के समान सीखने हेतु स्वयं को दे देना भी है। कुछ लोगों का विचार होता है कि वे सर्वज्ञानी हैं और अब कोई नई बात उनके सीखने के लिये नहीं बची है। ऐसा कहने में भी उन्हें झिझक नहीं होती है।

एक सड़क दुर्घटना के कुछ ही क्षण पश्चात् वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई। जो व्यक्ति मोटर साइकल चला रहा था उसके सिर पर चोट लगी थी। कुछ लोगों ने उसे उठाकर एक कार में लिटाया और अस्पताल जाने के लिये तैयार हुए। साथ में एक बुजुर्ग व्यक्ति भी कार में चढ़ने लगे। तभी पास खड़े युवक ने उन्हे टोका, "अंकल आप नीचे उतरिये, मैं साथ जाता हूँ। इससे अधिक फायदा होगा।"

"ऐसा क्यों?" उस बुजुर्ग सज्जन ने पूछा।

"मैं एन० सी० सी० टीम का सदस्य रहा हूँ। मैं प्राथमिक उपचार अच्छी रीति से जानता हूँ। आपके जाने से क्या लाभ होगा?"

"बेटा, अभी मेरा जाना ही लाभप्रद होगा। क्योंकि मैं एक न्यूरो सर्जन हूँ।" उन बुजुर्ग सज्जन ने उत्तर दिया।

प्राथमिक उपचार सीख लेने से न्यूरो सर्जन का ढोंग करना ही आज का चलन हो गया है। किसी बाइबल कॉलेज़ में थोड़ा सा अध्ययन कर लेने से कोई भी अपने आपको बाइबल का महान विद्वान समझ लेता है।

एक दिन प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात से उनके शिष्यों ने पूछा, "गुरू जी, जो कुछ आपको मालूम है, वह सब आप ने हमें बता दिया है क्या?"

"मैं तो यही सोचता हूं कि मैं ने सब बता दिया है?" सुकरात ने उत्तर दिया।

"अगर ऐसा है तो अब हम आपके बराबर हो गए हैं।" शिष्यों ने उत्तर दिया।

"लगभग।" सुकरात ने उत्तर दिया। "किन्तु एक बात में अन्तर है।"

शिष्य यह जानने के लिये व्याकुल हो गये कि वह एक बात क्या है। "बहुत सरल सी बात है," सुकरात ने कहा। "मैं अपनी अज्ञानता के विषय में जानता हूँ किन्तु तुम लोग अपनी अज्ञानता के विषय में नहीं जानते हैं।"

अपनी अज्ञानता के विषय में ज्ञान न होने के कारण कई बार हम ज्ञानी होने का अभिनय करते हैं। हमारी प्रार्थना कई बार "परमेश्वर, मुझे सिखा" न होकर, "परमेश्वर, तू तो जानता है कि मुझे सब मालूम है" होती है।

हमें यह भी स्मरण रखना है कि वचन हमारे पास केवल ज्ञान देने के लिये नहीं आता है। कई बार वह हमसे कई नई बातों - नए विचार, नई जीवनचर्या....की मांग करता है....। परमेश्वर जिन भावनाओं की मांग करता है, उन्हें निर्बाध रूप से बढ़ने देने के लिये जिस प्रकार हम अपनी भावनाओं के संसार को तैयार करते हैं, उसी प्रकार जिस जीवनचर्या की मांग वचन करता है, उसे स्वीकार करने के लिए अपने मन को तैयार करना ही नम्रता है। किन्तु जब एक नई बात सिखाने, नए ज्ञान में से होकर हमें रुपान्तरित करने के लिये वचन पास खड़ा होता है, तब भी वचन जो कुछ हमें सिखाता है उसे जानने या वचन जो रुपान्तरण हमें देना चाहता है उसे स्वीकार करने के लिये स्वयं को आधीन करने की दीनता - नम्रता हम दिखाते नहीं हैं। यह विचार कि मैं ज्ञानवान हूँ, हममें से कुछ नया सीखने का मन निकाल कर बाहर कर देता है।

पतरस की ही बात ले लीजिए। प्रभु को उसे एक बहुत बड़ा सबक सिखाना था। इसके लिये एक पृष्ठभूमि के रुप में परमेश्वर ने उसे एक असहाय दशा से होकर गुजारा। (प्रेरितों 10:9-16)

असहाय अवस्था में उसने "आकाश को खुला हुआ और एक बहुत बड़ा चादर चारों ओर से बन्धा हुआ धरती की ओर आते हुए देखा। उसमें पृथ्वी पर पाए जानेवाले हर प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी भी थे। एक शब्द गूंज उठा कि हे पतरस, उठ कर मार और खा। पतरस ने उत्तर दिया, कभी नहीं प्रभु, मैं ने कभी किसी अशुद्ध वस्तु को नहीं खाय है। उस शब्द ने दूसरी बार उससे कहा, जिसे परमेश्वर ने शुद्ध किया है उसे तू अशुद्ध मत कह। इस प्रकार तीन बार हुआ। तुरन्त ही वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया।"

पतरस को भूख लगी। प्रभु ने पतरस की भूख मिटाने के लिये एक विशाल भोज तैयार किया। एक बड़ा पात्र - चारों कोनों पर बन्धा हुआ चादर - जानवरों से भरा हुआ! नूह के जहाज में प्रवेश करनेवाले सभी जन्तु!!

असंख्य जानवर देने के पश्चात् प्रभु ने पतरस से कहा, "पतरस, उठ, तुझे भूखा रहने की आवश्यकता नहीं है, ये सभी जानवर तुम्हारे लिये हैं। उठकर मार और खा।"

पतरस पहले तो प्रसन्न हुआ। उसने जानवरों की ओर देखा। जिन्दगीभर खाएँ तौभी वह समाप्त नहीं होने वाला।

तुरन्त ही उसके अन्दर के धार्मिक संस्कार जाग उठे। वह जानवरों के पैरों की ओर देखने लगा। अधिकत्तर जानवरों के खुर फटे नहीं हैं। जिन जानवरों के खुर फटे हुए नहीं हैं, वे शुद्ध नहीं हैं। उसने कहा, "परमेश्वर यह तू क्या कह रहा है? ये जानवर शुद्ध नहीं हैं, क्या मैं इन्हे खाऊँ? कभी नहीं प्रभु। क्या तू नहीं जानता कि अब तक मैं ने ऐसा कुछ नहीं खाया है?"

शुद्धता और अशुद्धता के विषय में पतरस अच्छी तरह जानता है। आराधनालयों में उस

ने यह सीखा है। गुरुओं को उसके विषय में व्याख्यान देते हुए उसने सुना है। इसलिये प्रभु का वचन "उठ कर मार और खा" को नम्रता के साथ ग्रहण करना उसके लिये कठिन था।

पतरस सीखने के लिये तैयार नहीं है। प्रभु के वचनों का पालन करने के बजाय वह प्रभु को सिखाने का प्रयास करता है। "कभी नहीं प्रभु।" उसने कहा। उसे लगता है कि शुद्धता और अशुद्धता के विषय में जितनी जानकारी उसे है उतनी प्रभु को नहीं है?"

प्रभु ने कहा, "हे पतरस, जिसे प्रभु ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।"

कई लोगों के साथ ऐसा ही होता है। वे परमेश्वर से भी अधिक शुद्धता दिखाऐंगे। जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे भी वे अशुद्ध ठहराते हैं। उसके लिये कोई विशेष कारण नहीं होता है। जो कुछ उन्होने सीख रखा है उसे छोड़ कुछ और सीखने के लिये वे तैयार नहीं होते हैं। भले ही वह सीखना परमेश्वर की इच्छा हो तब भी। उनके पास सीखने की आत्मा (Teachable Spirit) नहीं होती है।

जो सीखने का धीरज नहीं रखता है वह बदलाव के लिये तैयार नहीं होता है। खाने के लिये जो जानवर दिए गए उनके विषय में पतरस की पूर्वधारणा कि वे अशुद्ध हैं, परमेश्वर के वचन को उसके भीतर प्रवेश करने से रोके रखता है। उसे सिखाने के लिये प्रभु गंभीर प्रयास करता है। प्रभु ने तीन बार उससे कहा, "पतरस, वे अशुद्ध नहीं हैं। मैं ने उन्हें शुद्ध किया है।"

नम्रता न होने में सबसे बड़ी समस्या यह है कि सत्य को जानने पर भी उसे मानना किसी व्यक्ति के लिये असम्भव हो जाता है। प्रभु के तीन बार कहने पर भी कि जानवर शुद्ध किए गए हैं, पतरस एक नए बहाने में अटका हुआ है। वह कहता है, "हो सकता है यह सही हो कि तूने उसे शुद्ध किया है, मैं बहस नहीं करता। चाहे वह शुद्ध हो या अशुद्ध हो, मुझे नहीं चाहिए। क्योंकि मैं ने अब तब ऐसा कुछ खाया नहीं है। जिन जानवरों के खुर चिरे हुए नहीं हैं, उन्हें खाना मेरी आदत नहीं है। इतनी उम्र बीतने पर भी अब तक मैं ने ऐसा कुछ नहीं खाया है। अब आगे खाना भी नहीं चाहता हूँ।" यहाँ हम वचन को नम्रता के साथ ग्रहण करने के बजाय उसे परम्पराओं द्वारा उसमें रुकावट डालते हुए देखते हैं। पीछा करनेवाली व्यवस्था से इन्कार करना उसके लिये मुश्किल है। मैं ने अब तक कोई अशुद्ध या मलिन वस्तु नहीं खाई है। अब तक जो कुछ मैं ने नहीं किया है, वह चाहे सही हो या गलत, अब मैं उसे करना भी नहीं चाहता हूँ।

परमेश्वर चाहता है कि जब वह हमसे किसी ऐसी बात की मांग करे, जो हमारी सीखी हुई बातों, विचारों और रीति विधियों से भिन्न हो तौभी हम उसे नम्रता के साथ, अध्ययन करने के धैर्य के साथ स्वीकार करें। प्रभु तीन बार पतरस से एक नई बात को स्वीकार करने की मांग करता है। किन्तु पतरस ने इतनी नम्रता नहीं दिखाई कि उसे स्वीकार कर ले। वह चादर वापस

शेष पृष्ठ 9 पर....

धनी व्यक्ति और अनन्त जीवन

ए. जे. अब्राहम

अपने जीवन में कई सुखों को भोगने वाला एक जवान। किन्तु जीवन में एक अजीब सी रिक्तता....। क्या करने से यह रिक्तता समाप्त होगी....? इस खालीपन को वह कैसे भरे....। यह जीवन तो क्षण भर में बीत जायेगा। फिर इसके बाद क्या....? और तभी उसने यीशु के बारे में सुना।

हाँ, यही है, यही है जो मेरी इस खोज का अंत कर सकता है। यही ईश्वर से मेरा साक्षात्कार करवा सकता है....और वह मसीह की खोज में निकल पड़ा। यीशु को सामने पाकर वह उसके सामने झुक गया। यीशु के सामने घुटने टेककर उस से उसने एक अहम् प्रश्न किया। एक ऐसा प्रश्न जो उसके जीवन की दिशा को बदल सकता था। आईये, इस व्यक्ति के जीवन का अवलोकन करें कि - इतनी नम्रता के प्रभु सामने झुकने वाला यह व्यक्ति - क्यों वह यीशु के पास से उदास होकर जाता है।

इस जवान को मैं आज मैं संसार के उन बहुत से लोगों के प्रतीक के रूप में देखता हूँ जो उद्धार पाने से वंचित रह जाते हैं। वे संसार में इतना अधिक लिप्त हो जाते हैं, कि उद्धार उनके सामने होने के बाद भी वे उद्धार प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

यीशु के जीवन में शायद ही कोई व्यक्ति ही रहा होगा जो उस के पास आकर उदास होकर गया हो। जबकि भीड़ की भीड़ यीशु के पास आया करती थी और आनंदित होकर उस के पास सेवहाँ से जाया करती थी। उनमें से कई लोग भूखे होते थे, कई लोग अन्धे होते थे, कई लोग लंगड़े-लूले होते थे, कई तो कुष्ठ रोग से पीड़ित होते थे। किन्तु हर एक व्यक्ति यीशु मसीह से कुछ न कुछ पाकर आनन्दित होकर वहाँ से जाते थे। लेकिन यह वर्णन अपने आप में अनोखा है, क्योंकि इस व्यक्ति के विषय में लिखा हुआ है, कि वह यीशु मसीह के पास से उदास होकर चला गया। क्या कारण है कि यह व्यक्ति यीशु मसीह के पास आकर भी.... इतना उत्सुक होने के बावजूद,... इतनी नम्रता होने के बावजूद वह उदास होकर चला गया? इस घटना का विश्लेषण

करने पर कुछ कारण नजर में आते हैं कि क्यों उसे यीशु के पास से उदास होकर जाना पड़ा।

यीशु को कम आंकना

यह व्यक्ति यीशु को उत्तम तो कहता है लेकिन यीशु को परमेश्वर का स्थान नहीं देता है। अपने जीवन में यीशु को वह एक गुरू का दरजा देता है,... एक शिक्षक का दरजा देता है। एक शिक्षक जो अच्छी बातें सिखाता है... जो अच्छे मार्ग बताता है। परन्तु यीशु को वह परमेश्वर का दरजा नहीं देता है।

यीशु मसीह उससे कहता है, तू जब मुझे परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं करता है, तो तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? होंठों से आदर करना और हृदय में परमेश्वर को स्वीकार करना दोनों अलग-अलग बातें हैं। रोमियों की पत्री 10:9 में लिखा हुआ है, कि यीशु को हमें अपने जीवन में किस रूप में ग्रहण करना है। वचन बहुत स्पष्ट रीति से कहता है, कि यीशु को हमें जीवन में प्रभु के रूप में स्वीकार करना है। हमारे जीवन में यीशु का स्थान केवल प्रभु का ही हो सकता है। यीशु हमारे जीवन में एक मित्र, एक अतिथि, एक सलाहकार जैसी कई भूमिकाएँ अदा करता है। किन्तु यीशु को अपने जीवन में हम एक ही स्थान दे सकते हैं और वह है प्रभु और स्वामी का स्थान। हम जानते हैं कि किसी घर में जब एक अतिथि आता है, तो उसकी क्या सीमाएँ होती हैं। घर के स्वामी की सी स्वतन्त्रता अतिथि की नहीं होती है। यीशु को जब हम अपने जीवन में प्रभु के अलावा कोई भी स्थान देते हैं तो हम उसे यीशु को वह स्वतन्त्रता नहीं दे रहे होते हैं जिसका वह वास्तव में हकदार है।

रोमियों के पत्री में पौलुस यही तो कहता है कि यीशु को हम अपने जीवन में प्रभु का स्थान दें। वह हमारे जीवन का, हमारे विचारों का, हमारी भावनाओं का स्वामी बने। जब हम उसे अपने जीवन पर प्रभुता देते हैं, तब वह हमारे जीवन पर राज्य करने लगता है। परमेश्वर के राज्य के नियम हम पर लागू हो जाते हैं। किन्तु इस व्यक्ति को जब हम देखते हैं तो उसमे यहीं पर कमी पातं पाते हैं।

इसिलिये यीशु उससे कहता है कि तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? जबकि परमेश्वर ही है जिसे हम सर्वश्रेष्ठ का स्थान दे सकते हैं। यह व्यक्ति यीशु को परमेश्वर का स्थान नहीं देता है। वह यीशु को कम करके आंकता है।

परमेश्वर झूठी प्रशंसा का भूखा नहीं है। हमारा परमेश्वर हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होने वाला

परमेश्वर है। भजनकार दाऊद अपने भजन में कहता है, "हे परमेश्वर, देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है।" जब हम हृदय की सच्चाई से परमेश्वर को अपने जीवन में स्वीकार करते हैं, उसे वह स्थान देते हैं, जो उसका है, तो वह प्रसन्न होता है और हमारे जीवन में कार्य करने लगता है। परमेश्वर को अपने जीवन में उचित स्थान देने का अर्थ है, उसे अपने जीवन में कार्य करने की स्वतन्त्रता देना। जब हम यीशु को अपने जीवन का प्रभु कहते हैं, तो हम एक प्रकार से अपना जीवन उसके हाथों में सौंप रहे होते हैं। हम प्रभु से कहते हैं, कि हे प्रभु अब से मेरा जीवन तेरे हाथ में है,... तू जैसा चाहता है वैसा ही मुझे ले चल। जिस मार्ग से मुझे चलना है, उससे तू मुझे ले चल। जहाँ मुझे जाना है, वहाँ तू मुझे ले चल। तू मेरे आगे-आगे चल और मैं तेरे पीछे - पीछे चलूँगा। यीशु को कम आंकना उसकी उदासी का कारण बना। अपने जीवन में हमें यीशु को वह स्थान देना है उसका है।

स्वयं को अधिक आंकना

यह व्यक्ति व्यवस्था पर चल कर स्वयं धर्मी ठहरने वाला व्यक्ति था। यीशु मसीह उससे पूछता है, तू आज्ञाओं को जानता है, हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झुठी गवाही न देना, छल न करना, अपनी पिता और अपनी माता का आदर करना।

वह उत्तर देता है कि हाँ गुरू, इन सबको तो मैं लड़कपन से मानता आया हूँ। यीशु मसीह उसके हृदय की भावना को समझते हुये उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम करता और उससे कहता है, तुझ में एक बात की घटी है। यह आप क्या कह रहे हैं, प्रभु? घटी...? मुझमें...?...

यीशु मसीह इस प्रकार क्यों कहता है? यीशु मसीह उससे कहता है, कि अपना सब कुछ बेचकर उसे कंगालों को दे दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। आम तौर पर लोगों की सोच यह होती है कि धर्म - कर्म की बातें बुजुर्गों के लिये हैं, युवाओं के लिये नहीं। जवानी में ऐश करो, ईश्वर के बारे में बुढ़ापे म सोचेंगें। इसलिये हम देखते हैं कि लोग बुजुर्ग अवस्था में अपना गृहस्थ संसार को छोड़कर तीर्थयात्रा पर निकल पड़ते हैं। अपने जीवन के सांझ में वे ईश्वर को खोजने के लिये निकल पड़ते हैं। यहाँ सवाल कुछ धन से किसी की सहायता करने का नहीं है। यह जवान, जिसके सामने अभी पूरा जीवन शेष है; यदि वह अपना पूरा धन कंगालों को दे देगा, तो वह अपना पूरा जीवन किस प्रकार व्यतीत करेगा। यीशु मसीह उससे प्रतिज्ञा करता है, "तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा।" संसार के जीवन की नश्वरता को समझे बिना हम स्वर्ग के धन का मोल नहीं लगा सकते

शेष पृष्ठ 15 पर.....

.....नम्रता की आत्मा

आकाश पर उठा लिया गया। परमेश्वर के वचन को बिना किसी पूर्व धारणा के नम्रता के साथ स्वीकार करने के लिये हमारे तैयार न होने भर से न जाने कितनी ही स्वर्गीय आशीषें वापस ले ली जाती हैं।

याकूब के पद में वर्णित नम्रता शब्द का एक और अलंकारिक प्रयोग हम पतरस के लेख में देखते हैं, "नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा किया करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)।

अभी जन्म लिये बच्चे को माँ के दूध की ही आवश्यकता है। कुछ लोगों को शंका हो सकती है कि क्या बच्चे के लिये माँ का दूध ही काफी है? धर्मशास्त्र कहता है कि नवजात् शिशु के लिये माँ का दूध ही काफी है। वह सम्पूर्ण भोजन है। इसलिये कितनी भी दरिद्र माँ हो वह भी अपने बच्चे को सम्पूर्ण आहार देकर पाल सकती है। वचन नए विश्वासी का सम्पूर्ण आहार है।

कई बड़े बच्चे दूध को उसी प्रकार पीने की इच्छा नहीं रखते हैं उन्हें दूध में कुछ मिलाना अच्छा लगता है। कुछ बच्चे दूध में शक्कर डालकर पीते हैं तो कुछ बच्चे चॉकलेट डालना पसन्द करते हैं। लेकिन अभी जन्म लिए शिशु को इन सब बातों की इच्छा नहीं है। उसे केवल माँ का शुद्ध दूध की ही इच्छा है। पतरस कहता है कि इसी प्रकार हमें भी वचन रुपी निर्मल दूध की कामना करना है।

याकूब के लेख में जब वचन को नम्रता के साथ ग्रहण करने के लिये कहा गया है तो पतरस वचन की तीव्र अभिलाषा करने के लिये कहता है - एक पद दी जानेवाली वस्तु को स्वीकार करने का आग्रह करता है तो दूसरा उसकी खोज में जाने के लिए प्रेरित करता है। ये दोनों दशाएँ हमारे लिये अनिवार्य हैं। जो वचन हम सुनते हैं उसे सही भावना के साथ स्वीकार करना है। जहाँ हमें आनन्दित करना है वहाँ वचन हमें आनन्दित करता और जहाँ पश्चाताप् उत्पन्न करना है, वहाँ पश्चाताप् भी उत्पन्न करना चाहिए। तभी हम कह सकते हैं कि हम नम्रता के साथ उसे ग्रहण कर रहे हैं। इसी प्रकार उचित अध्ययन की धैर्य के साथ हमें वचन को ग्रहण करना चाहिए। कल तक जो हम ने विचार पाल रखे थे, वचन का अनुसरण करने के लिये उन्हें छोड़ देने और जब वचन एक अन्जान जीवनचर्या की मांग करता है तो उसे स्वीकार करने की नम्रता भी हममें होनी चाहिए। उसी समय जब जब भी वचन प्राप्त हो तब तब उसे न केवल स्वीकार करना है परन्तु एक नवजात शिशु जितनी अधिक माँ के दूध की कामना करता है, उसी प्रकार की इच्छा वचन के लिए भी हम में होनी चाहिए।

मार्ग सच्चाई और जीवन

सैमूएल, नंगलापूट, यू० पी०

आठ वर्ष की आयु से ही मैं परमेश्वर की खोज में लगा था। परन्तु फिर भी मुझे शान्ति न मिली। जब मैं छोटा ही था, मेरे पिता का देहान्त हो गया था। परिवार की सारी चिन्ता अब मेरी माँ पर आ पड़ी थी। मेरे भाई तो फिरोजाबाद में नौकरी करने चले गए थे। पिता की मृत्यु के बाद अब घण्टों खेत पर काम करने का उत्तरदायित्व मुझ पर आ पड़ा। इस अत्याधिक परिश्रम के कारण मैं बीमार पड़ गया। भिन्न भिन्न औषधियों के बावजूद मेरे स्वास्थ्य में सुधार न हुआ।

गाँव का एक मित्र

आगरा में एक दिन मेरे भाई नाथूराम सड़क पार कर रहे थे, उसी समय उनकी भेंट हमारे गाँव के एक मित्र से हुई। इस नवयुवक ने कुछ दिन पूर्व ही प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके उनको अनुभव से जाना था। उन्होंने मेरे भाई साहब से पूछा कि वे कहाँ जा रहे थे, और उन्हें एक घर में जहाँ मसीही आराधना करते थे, आने का न्योता दिया। परमेश्वर के सवेक जो उन सभाओं के वक्ता थे, वे मेरे भाई से प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जो मुक्ति मिलती है, उस पर वार्तालाप करने लगे। फलस्वरूप मेरे भाई मसीह पर विश्वास ले आए। बाद में उनका बपतिस्मा हुआ, परमेश्वर के सेवक ने उनको बताया कि अब वह जाकर अपने मित्रों को बतायें कि किस प्रकार मसीह ने उनको उद्धार का अनुभव दिया है।

मेरे भाई ने गाँव में लौटकर, जिनसे भी उनकी भेंट हुई, बताया कि अब वे प्रभु यीशु के हो गए हैं। शाम के समय गाँव में वह प्रार्थना सभा करते थे और बहुत से लोग इकट्ठा हुआ करते थे। वे मुझसे भी मसीह के विषय में बातें करने लगे। उस समय मैं अस्वस्थ ही था और मेरे भाई ने मुझे बताया कि किस प्रकार प्रभु यीशु ने अन्धों को दृष्टि दी, मुर्दों को जिलाया, और कोढ़ियों को शुद्ध किया। वे तुम्हें भी चंगा कर सकते हैं, उन्होंने कहा। और मुझे सलाह दी कि मैं भी प्रार्थना सभा में आया करूँ, जबकि भाई ही मझे उत्साहित कर रहे थे।

कोई दूसरा नहीं

लगातार अपने भाई के साथ मैं अपने गाँव की प्रार्थना सभा में जाता रहा। वहाँ मैं प्रभु यीशु मसीह के सन्देश को सुनने लगा। इससे पूर्व मैं यह सोचा करता था कि चाहे हम किसी भी ईश्वर की उपासना करें, इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। कोई उसे एक नाम से पुकारता है कोई उसे दूसरे से, मैं कहता, परन्तु सब एक हैं, इससे क्या अन्तर पड़ता है। परन्तु परमेश्वर के वचन बाइबल से सन्देश

सुनते समय मैंने प्रभु यीशु मसीह के इन वचनों को सुना, मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ, मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं, जिसके द्वारा हम उद्धार प्राप्त कर सकें। इन वचनों ने मुझसे बातें की। प्रार्थना सभा में विश्वासियों में से एक ने मसीह के यह वचन मुझे दिखाए, हे सब थके और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। उन्होंने मुझे प्रभु यीशु के पास आने को कहा। यदि तुम मसीह के पास आओ, अपने पापों को स्वीकार करो, और यीशु पर विश्वास करो। तब न केवल वे तुम्हें चंगा ही करेंगे, परन्तु अनन्त जीवन भी देंगे, उन्होंने कहा।

मैंने प्रार्थना की और कहा, प्रभु यीशु मसीह, यदि आप मुझे मेरे रोग से चंगाई प्रदान करेंगे, तब मैं जीवन भर आपकी सेवा करूँगा। तब प्रभु यीशु मसीह के साम्हने मैंने अपने पाप मान लिये और मुझे बहुत अधिक आनन्द प्राप्त हुआ।

इस समय तक अपनी समस्त धार्मिक रीतिविधियों के बावजूद मुझे सच्ची शान्ति का अनुभव नहीं था, परन्तु मसीह ने मुझे अपनी शान्ति दी। उन्होंने मेरे शरीर को चंगा किया और मेरा स्वास्थ्य और बल फिर से लौट आया। कुछ समय उपरान्त परमेश्वर के सेवक आगरा से आये और उन्होंने बाइबल से बताया कि जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है वे उनमें अपने नए जीवन की साक्षी, बपतिस्मा के द्वारा दें। *8* सितम्बर *1950* को मेरा बपतिस्मा हुआ और मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन मसीह के हाथों में सौंप दिया।

विरोध

प्रतिदिन हमारे गाँव में एक सभा होती थी और उसमें बहुत से लोग इकट्ठा होते और प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाया जाता था। तब सहसा ही विराध होने लगा। पंचायत बुलाई गई; वहाँ यह माँग की गई कि जो मसीह पर विश्वास करते हैं, अन्य लोगों से अलग हो जाएँ। इसका परिणाम यह हुआ कि केवल चार पान्च जन ही मसीह के लिये दृढ़ रहे। पंचायत के भय के कारण बाकी लोग अपने पुराने मार्ग पर लौट गए।

बपतिस्मा के समय मेरे भाई ने अपना नाम नथनिएल रख लिया था। उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें मसीह का दर्शन दें। *22* दिन तक उन्होंने भोजन नहीं किया, अन्त में उनका भी संतुलन मन बिगड़ गया और वे भी अपने पुराने जीवन को लौट गए। जो मसीह के अनुगामियों को सताते थे, नथनिएल भी उनके साथ हो लिये। उन्होंने मुझसे भी कहा, कि मैं भी मसीह पर अपना विश्वास त्याग कर पुराने जीवन में लौट आऊँ। मैंने उत्तर दिया, भैया, प्रत्येक को अपना निर्णय स्वयं करना है, जहाँ तक मेरा प्रश्न है, प्रभु यीशु मसीह ने मुझे बचाकर आनन्द और शान्ति दी है।

इसके बाद गाँव के सारे लोग और नेतागण इकट्ठा हुए। मुझसे कहा गया, जब तक तुम अपने पुराने रास्ते पर लौट नहीं आते तुम्हें पीटा जाएगा। भैंस के खूटे से मेरे हाथ बाँध दिये गए। मेरी

शेष पृष्ठ 13 पर....

शब्द पहेली

इस शब्द पहेली में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 3, 4, 6, 10, 11, 14, 20, और 21 अध्यायों में प्रयुक्त दस शब्द दिये गये हैं। इन्हें बायें से दायें, ऊपर से नीचे और आड़ी दिशा में ढूंढ़िये। यह शब्द पहेली आपकी व्यक्तिगत उन्नति के लिये है।

सिं	मे	घ	ध	नु	ष	स	स
सिं	हा	स	म	ट	ठ	ली	न
क	दु	ब	झ	ड	ब	य	न
च	हा	ल्हि	म	इ	स	रु	क
सिं	हा	स	न	जी	भी	श	श
पं	हा	उ	कि	अ	न	ले	य
ज	हा	न	व	स	ज	म	णा
द्र	हा	यु	गा	नु	यु	ग	ह
मु	कु	ट	उ	द	स	न	र
ह	हा	न	ब	म	स	न	ल
र	हा	क	स	स	हं	सु	आ

बाइबल ज्ञान पहेली क्रमांक 8 का उत्तर।

1. पर्वत पर न चढ़ना, न छूना। 19:23
2. यित्रो। 3:1
3. पहले महीने के चौदवें दिन गो धुली के समय। 12:3
4. सीन नाम जंगल में। 16:1
5. यहोवा के द्वारा बताये पौधे को पानी में डालने से। 15:25
6. हारून, नादाब, अबीहू, एलीआजर, इतामार। 29:9
7. भेड़ बकरियों को चराता था। 3:1
8. यहोवा पवित्र करनेहारा है। 31:13,14
9. यहोवा। 4:11
10. लेवी गोत्र का। 2:1

विजेता का नाम

मगदलीना टप्पो, आर पी एफ् कॉलोनी, बिलासपुर, छ0ग0

(विजेता को उत्तम चुनाव नामक पुस्तक उपहार स्वरूप भेजी जा रही है।)

बाइबल लेकर टुकड़े-टुकड़े कर दी गई। अब भी मान लो कि तुम मसीही नहीं हो, वे चिल्लाए।

मैंने उत्तर दिया, नहीं, मसीह ने मुझे बचाया है, मैं उन्हें का अनुकरण करता रहूँगा।

शान्त और सुरक्षित

गाँव के दो पुरूषों ने मुझे पीटा। तब चौधरी ने एक आदमी को बबूल की कांटेदार डाली तोड़कर लाने को कहा। वे बोले, जब तक वह अपना मन न बदले तब तक उसकी पिटाई होगी। बबूल की छड़ी आ चुकी थी, वह मुझे मारने लगे परन्तु इसी समय मुझे प्रभु यीशु मसीह के यह वचन याद आए, उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते, पर आत्मा को नहीं मार सकते, वरन् उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। मेरे मन में विचार आया, यदि मैं मर जाऊँगा तो मसीह के पास जाऊँगा; यह तो अति आनन्द की बात होगी। मेरा हृदय शान्ति से परिपूर्ण हो गया। मसीह के आरम्भिक शिष्यों ने उनके नाम के निमित्त जो दुःख उठाए थे, वह भी मुझे स्मरण आए। लगातार पिटाई से वे मेरे शरीर को बेधते रहे। मैं लहूलुहान हो गया परन्तु जैसे-जैसे मैंने प्रार्थना की मेरे हृदय की रक्षा उस शान्ति द्वारा होती रही। जब मेरा बहुत सा लहू बह गया कुछ लोग पुकार उठे। अब उसे और मत मारो। मेरे कपड़े जो उतार लिये गए थे, मुझे लौटा दिये गये और मैं छोड़ दिया गया।

खेत में मैंने एक झोपड़ी बना रखी थी, जहाँ मैं प्रार्थना के लिये जाया करता था। इसके बाद मैं वहाँ गया और प्रभु से कहा कि जिन्होंने मुझे मारा था, वह उन्हें क्षमा करें और यह भी कि वे मुक्ति का अनुभव पायें। इसी समय से मेरे भाई नाथुराम जिन्होंने मेरे साथ दुर्व्यवहार करने वालों का साथ दिया था, उनकी आँखों की ज्योति कम होने लगी। वे बहुत व्याकुल हुए और उन्होंने आगरा के विश्वासियों को लिखा, जब से मैंने बाबूराम (सैमूएल) को पीटा है, मेरी आँखों की ज्योति घटने लगी है। अब मेरे मन में शन्ति नहीं है। बाद में वे आगरा के विश्वासियों से भेंट करने गये। उन्होंने उनसे कहा, तुमने जो कुछ अपने भाई के साथ किया, अवश्य है कि जाकर तुम उससे क्षमा माँगो।

पुनःस्थापन

इन्हीं दिनों गाँव में मेरी प्रार्थना के कारण मेरी नष्ट की गई बाइबल के बदले में परमेश्वर ने मुझे एक और बाइबल दिया। कुछ दिनों बाद जब नाथूराम (नतनिएल) गाँव में लौट आया, अपने साथ वे एक नई बाइबल लेकर आए। मुझे बाइबल देते हुये वे बोले, भाई तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करके मैंने भूल की है। क्या तुम मुझे क्षमा करोगे? मैंने तो आपको पहले ही क्षमा कर दिया है, मैंने कहा। आप परमेश्वर से क्षमा माँगिये। तब हम दोनों ने घुटने टेके और मिलकर प्रार्थना की। तब से हम प्रार्थना और सहभागिता में जुटे रहे हैं और परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं को सुना है। सारी महिमा उसी के नाम को मिले।

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 10

नोट : सभी प्रश्न गलातियों की पत्री से लिये गये हैं।

1. मसीह ने किस बात के लिये हमें स्वतन्त्र किया है?
2. जो शरीर के लिये बोता है वह कौन सी कटनी काटेगा?
3. परमेश्वर ने हमारे हृदय में किसे भेजा है, जो हम उसे हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं?
4. मसीह में बपतिस्मा लेनेवालों ने क्या पहिन लिया है?
5. प्रतिज्ञायें किसे दी गई थी?
6. धर्मीजन किस बात से जीवित रहेगा?
7. मनुष्य किस प्रकार धर्मी ठहरता है?
8. जो सुसमाचार पौलुस ने सुनाया उसे वह किस प्रकार मिला था?
9. पौलुस क्यों विश्वासियों के लिये जच्चा की सी पीड़ा सहता है?
10. मसीही जन पुत्र होने के कारण क्या बना?

नियम और शर्तें :

- पहेलियों के हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि फरवरी 29 है।
- धर्मशास्त्र से मेल खानेवाले उत्तर ही मान्य होंगे। उत्तरों के साथ बाइबल संदर्भ देना अनिवार्य है।
- सभी प्रश्नों के सही हल भेजने वाले ही विजेता घोषित किये जाएंगे।
- कृपया अपना नाम और पता साफ-साफ अक्षरों में लिखें।
- सभी हल पोस्टकार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजें।
- सभी विजेताओं को एक अमूल्य पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

-जीवन का मार्ग, पोस्ट बॉक्स् नं. 27, बिलासपुर - 495 001. छ.ग.

हैं। इसीलिये यीशु मसीह के इस कथन पर विश्वास करना उसके लिये बेहद मुश्किल रहा।

इस व्यक्ति के जीवन की यह दूसरी कमी उसे यीशु के पास से दुःखी मन लेकर जाने को विवश करता है। वह अपने आपको बहुत अधिक आंकता है। वह स्वयं धर्मी समझता है। वह सोचता है कि वह तो लड़कपन से ही सारी आज्ञाओं को मानता आया है। उद्धार पाने के लिये अब और क्या करना शेष रह गया है। वह भी करने के लिये वह तैयार है। और आज विडंबना यही है। उद्धार तो सभी पाना चाहते हैं परन्तु किसी को यह नहीं मालूम कि उद्धार है किस चिड़िया का नाम? यीशु मसीह से साक्षत्कार उस के अनुमानों और आकलनों को ध्वस्थ कर देता है।सब कुछ बिखरकर टूट जाता है। यही उसकी कमी थी। जीवन के विषय उसके सिद्धांत ही गलत थे।

अगर यीशु मसीह ने उसे अपनी संपत्ति को बेचकर कंगालों को देने और स्वर्ग पर धन मिलने की बात की तो इसके पीछे एक बहुत बड़ा भेद था। यदि हमें सच मुच में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है तो हमें इस संसार की नश्वरता को और उस संसार की अनश्वरता को समझना होगा। उसके विषय में एक वास्तविक ज्ञान हमारे भीतर होना आवश्यक है। जिसके पीछे हम चलने के लिये अपने आपको तैयार करते हैं उसके पर हमें पूर्ण भरोसा होना चाहिये। प्रभु उससे कहता है, कि अपनी संपत्ति को बेचकर कंगालों को दे दे। क्योंकि तू तो अनन्त जीवन पाने के लिये आया है और अनन्त जीवन पाने के लिये या उसे जीने के लिये इस धन की आवश्यकता नहीं, बल्कि स्वर्ग के धन की आवश्यकता है। परन्तु वह व्यक्ति उदास होकर यीशु मसीह के पास से चला गया।

उसने अपने आपको एक बहुत बड़ा धर्मी माना था। अपने आपको वह स्वर्ग राज्य में प्रवेश करने लायक या उसके लिये परिपक्व मानता था। परन्तु यीशु मसीह उससे कहता है, तुझ में एक बात की घटी है। अपने आपको वह बहुत अधिक आंकता है और वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाता है।

हमारी धार्मिकता हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं दिला सकती है। परमेश्वर के राज्य में हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही प्रवेश कर सकते हैं। परमेश्वर का राज्य हर किसी के लिये खुला हुआ है। लेकिन उसमें प्रवेश करने का एक ही शर्त है कि हम परमेश्वर के हाथ में अपने आपको सौंप दें। और परमेश्वर की जो इच्छा है उसके अनुसार अपने जीवन को हम बनायें और तब हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। **शेष अगले अंक में.....**

टोकरी में बालक

इस्राएली बहुत वर्षों तक मिस्र में रहते रहे और उनका वंश बढ़ता गया।

मिस्र में एक नया राजा सिंहासन पर बैठा। उसने सोचा कि इस्राएली लोग धीरे-धीरे मिस्र के सिंहासन पर कब्जा कर लेंगे। इसलिये वह उनके पुत्रों को पैदा होते ही मार डालने की योजना बनाई।

परन्तु मूसा की माता ने अपने बालक को बचाने की योजना बनाई। उसने एक टोकरी में बालक को रखकर नदी में बहा दिया और उसकी बहन मरियम उसे दूर जाते हुए देखती रही।

तभी फिरौन की बेटी अपनी सहेलियों के साथ वहाँ नहाने आई। उसने टोकरी में बालक को देख कर उसे अपने पास रख कर पालने का निर्णय लिया।

मरियम ने फिरौन की बेटी से कहा कि वह उसे दूध पिलाने के लिये एक महिला को ला सकती है और उसने बालक की माता को उसके पास लाई।

इस प्रकार मूसा फिरौन के राजमहल में अपनी स्वयं की माता और फिरौन की बेटी के द्वारा पाला गया।

रंग भरो

उपलब्ध पुस्तकें

10 से अधिक प्रतियों पर विशेष छूट!!

हिन्दी पुस्तकें : 1. आत्मिक गीतावली (100/-), 2. बपतिस्मा वनाम मसीह की सहाभागिता (मुफ्त), 3. चट्टान पर नींव डालने वाला (50/-), 4. जोनी (30/-), 5. जॉर्ज मूलर (40/-), 6. नई सुबह (25/-), 7. मृत्यु, मृत्यु की घाटी और परमेश्वर की शरण (मुफ्त)

हिन्दी बाइबल : 8. पवित्र बाइबल सामान्य (120/-), 9. पवित्र बाइबल सामान्य कवर के साथ (200/-), 10. पवित्र बाइबल थम्ब (700/-), 11. पवित्र बाइबल गोल्डन-१ (700/-), 12. पवित्र बाइबल गोल्डन-२ (700/-), 13. पवित्र बाइबल फ्लैप (700/-), 14. पवित्र बाइबल अंग्रेजी-हिन्दी (1000/-), 15. पवित्र बाइबल बड़ा अक्षर (300/-), 16. सचित्र बच्चों की बाइबल (120/-), 17. पवित्र बाइबल गोल्डन बिना चैन के (500/-)

English Bible : 18. Good News Bible (100/-), 19. The Devotional Study Bible (120/-),20. Holy Bible Key (125/-),21. Holy Bible Good news edition (120/-).

प्रतियाँ प्राप्त करने के लिये संपर्क करें -

Sanctuary Literature Service
P.B. N0. 27, Bilaspur, C.G- 495 001.
Cell Phone : +91 94255 49016